Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

साहित्य में यथार्थ का महत्व

Dr. Smitha Chacko*

Guest Lecturer, St. Thomas College, Konny, Pathanamthitta

सार – आज इधर की साहित्यिक गतिविधियों पर नज़र डाली जाते तो एक बात प्रमुखता से उभरकर सामने आती है , आज साहित्य के अन्तर्गत जीवन के विभिन्न पहलू उदघाटित हुए हैं। विषय के वैविध्य इसकी और एक विशेषता है।

----------X----------

यथार्य की नयी अभिव्यक्ति

नयी कहानी के कहानीकार तथा साहित्य के निर्माता जब यथार्थ का रोमांटिक आदर्श के धरातल पर प्रस्तुत करने लगे तो छठे दशक के बाद के कथाकार आपने युग जीवन के बदलते हुए यथार्थ को वाणी देने में निमग्र रहे। स्वतन्त्रोत्तर कथा साहित्य में चित्रित यथार्थ बहुआयाभी है। यथार्थ की खोज करते समय इस युग के कथाकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अस्पर्शित प्रसंगों एवं स्थितियों को पूरी ईमानदारी से चित्रित किया है। सामान्य मनुष्य की ज़िन्दगी में जीवन जीने की विषम आर्थिक स्थितियाँ वैज्ञानीकरण, औद्योगीकरण और तकनीक के विकास से उत्पन्न नव नवीन स्तिथियाँ और समस्यायें बनी हुई हैं। डॉ. पुष्पपालसिंह कहते हैं - "वर्तमान से भिडने का आग्रह साठोत्तर कहानी को जीवन की खुरदरी ज़मीन पर ला खड़ा करता हैं। इस प्रकार नई कहानी अनुभूत और भोगे हुए यथार्थ को प्रामाणिकता से व्यक्त करने की जिस प्रतिबदधता को लेकर चली थी,उससे दूरे उसी सूत्र में जोड़कर जीवन की सच्चाईयों को कहानी मेम जिया"।[1] अतः यथार्थवादी साहित्य के कारण जीवन को समझने में मदद मिलती है।

परिवेश के प्रति जागरूकता

इस युग का कथाकार अपने युगीन परिवेश के प्रति अत्यन्त सचेत है। वास्तव में यथार्थ के रचयिता पात्र तथा इसी परिवेश के त्रासद स्थितियों के कारण निर्माण होता हैं। पुष्पपाल सिंह लिखते हैं -"आज की कहानीयों को सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा साम्प्रदायिक आर्दि के खोतों में डालकर नहीं खतियाय जा सकता है। आज ये सब कथाकार के लिए यथार्थ का एक संश्लिष्ट रूप है। उसकी चेतना परिवेश में गहरे पैठी हुई होने के कारन इस सब स्थितियों से प्रभावित होती है। परिवेश का संक्रांत जीवन की मानों कहानियों में लेखकीय दृष्टि से उठाकर लिख दिया गया है।[2]

नयी मूल्य दृष्टी

इस युग के कथाकार ने पुराने मूल्यों नकार कर नए मूल्यों का अविष्कार किया है। भाई - बहन, माँ - बाप, पति - पत्नी ,परिवार के स्वजन आदि को पारस्परिक संबन्ध परिवर्तित हुए हैं। डॉ. गंगाप्रसाद विमल के अनुसार "पुरानी पीढ़ि से संबन्धों के मूल्यों में काफी गड़बड़ सी प्रतीत होती है। सम्बन्धाभाव और सम्बन्धहीनता की स्थितियाँ विस्तार से कही नहीं गई है। काशीनाथ सिंह की 'सुख' रमेश बक्षी की 'पिता दर पिता' आदि कहानियों में पूर्व पीढ़ी के प्रति श्रद्धा और सम्मान के स्थान पर घृणा की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है।[3] वास्तव में इस परिवर्तित मूल्य दृष्ट के पीछे व्यक्ति स्वातंत्र्य का महत्व अत्यधिक रहा है।

नारी समस्या का यथार्थ रूप

इस युग के कथाकारों में विशेषकर नारी लेखिकाओं का दृष्टिकोण में नारी जीवन की बहुमुखी समस्याओं एवं उसकी आत्मपीड़ाओं की सूक्ष्म एवं गहरी अभिव्यक्ति हुई है। इस युग की नारी को कई भूमिकाओं में संघर्ष करना पड़ा हैं जैसे -माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका आदि इसी प्रकार कार्यशैली, जीविका तथा अपनी अस्मिता स्थापना के लिए व्यग्र नारी अपने जीवन परिवेश की कई सीमाओं पर संघर्ष कर रही है। डॉ. जितेन्द्र वत्स कहते हैं-"वास्तव में कमाऊ नारी को घर और बाहर दोनों स्तरों पर सामना करना पड़ता है। बहार प्रतिकार करना पड़ता है। पुरुषों की कामुक और वहमी नज़रों का और घर में संकीर्ण मनोवृत्ति के लोगों का। आचरण की बँधी हुई सीमाओं में उसे आपने पति तथा परिवारजनों से कई मुददो पर टकराना पड़ता है "।[4]

राजनीति का यथार्थ रूप

प्रतिपाद्य युग का कथाकार राजनीतिक गतिविधियों के प्रति पूरी तरह सतर्क है। वस्तुत :आज की राजनीतिक स्थितियाँ भी इस कथाकार के जीवन का अंग है। डॉ. पुष्पपाल सिंह के अनुसार - "आज का लेखक राजनीति को अपने लेखन से अलग करके इसलिए नहीं देख सकता क्योंकि उसके जीवन यथार्थ की स्थितियों को गढ़ने में राजनीति का बहुत बड़ा हाथ है। इसलिए राजनीतिक जीवन के छल छन्द को कथासाहित्य में अभिव्यक्ति मिली है"।[5] कुल मिलाकर स्वार्थ केन्द्रित राजनीती का यथार्थ रूप साहित्य में दिखाई दे रहा है।

नया नैतिक बोध

मूल्यों में परिवर्तन के साथ - साथ आज नैतिकता का परंपरागत अर्थ भी परिवर्तित हुआ है। परिवर्तित जीवन को यथार्थ स्थितियों ने पूर्ववर्ती नैतिक मूल्यों को नकार दिया है। इस परिवर्तित जीवन दृष्टि के फलस्वरूप आज व्यक्ति का कोई भी बोध भय को जन्म नहीं देता। यथार्थवादी साहित्य के कारण नवीन नैतिक मूल्यों को समझने में मदद मिली है।

महानगरीय जीवन की भयावहता का चित्रण

औधोगीकरण तथा मशीनीकरण के परिणामस्वरूप आज शहरी जीवन में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखा गया है। मानवी संबन्धों में परिवर्तन आ रहा है। मनुष्य आज सहानुभूति - शून्य हो गया है। महानगरीय परिवेश में माँ - बाप, बहन - भाई, मित्र - परिवार, पति - पत्नी के सम्बन्धों की परिभाषा बदल गयी है। इसका चित्र यथार्थवादिता के कारण मूर्तरूप धारणा करता है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि यथार्थवाद के कारण साहित्य में जीवन के अनेक मानवीय परिवर्तनों का दस्तावेज प्रस्तुत हैं। इस युग के कथाकारों ने अपने साहित्य में यथार्थ की अभिनव अभिव्यक्ति, परिवेश के प्रति सतर्कता, नयी मूल्य दृष्टि, नारी जीवन की बहुमुखी समस्याएँ, आम आदमी की प्रतिष्ठा, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, वर्तमान व्यवस्था के प्रति तीव्र रोष तथा विद्रोहीस्वर, नया नैतिकता बोध, महानगरीय जीवन की भयंकरता, आर्थिक संबन्धों की अस्वीकृति आदि विभिन्न विषयों का यथार्थ के सहारे सच्चे रूप में समझना आसान हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी: युगबोध का संदर्भ ,पृष्ट 87
2. डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी: युगबोध का संदर्भ ,पृष्ट 91
3. डॉ. शिवनारायण दिवेदी, साठोत्तर हिन्दी कहानी, पृष्ट 102
4. डॉ. जीतेन्द्र वत्स, साठोत्तर हिन्दी कहानी: उपलब्धि और सीमाएँ, पृष्ट 65
5. डॉ. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी : युगबोध का संदर्भ, पृष्ट 99

Corresponding Author

Dr. Smitha Chacko*

Guest Lecturer, St. Thomas College, Konny, Pathanamthitta